بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 5 जून, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(अहसान महीने की तिथि 5 ,1405 हश)

आँहज़रत ﷺ की गुलामी में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. की आजज़ी व इन्कसारी की घटनाएं तथा अपनी जमाअत को विनय और विनम्रता धारण करने का उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 05.06.2026
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ـ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ـ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ـ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ـ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ـ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّينَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: गुज़श्ता ख़ुत्बे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के इज्ज़ व इन्किसार के वाक़िआत या नसाएह (नसीहतें) बयान किए थे। आज भी इसी हवाले से कुछ वाक़िआत बयान करूँगा।

हज़रत शेख़ मोहम्मद इस्माइल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अख़्लाक़-ए-हसना (सुन्दर आचरण) का यह हाल था कि क़ादियान के जो लोग हर वक़्त आप अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ दुश्मनी करने में मश्ग़ूल रहते थे और कोई दक़ीक़ा (मौक़ा) न जाने देते। मगर जब भी उन्होंने आप अलैहिस्सलाम के आस्ताने पर दस्तक दी, आप अलैहिस्सलाम नंगे पाँव तशरीफ़ लाते और सलाम का जवाब देकर पूछते कि आप अच्छे तो हैं और उसके घर वालों का हाल पूछते और फ़रमाते कैसे आए हैं? फिर वह जो भी ज़रूरत पेश करता तो आप पूछते कितनी ज़रूरत है और उनकी ज़रूरत से ज़्यादा ला कर देते।

हज़रत मौलवी शेर अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार बताया कि मीरां बख़्श सौदाई एक मख़्बूतुल-हवास (मानसिक रूप से अस्वस्थ) शख़्स था, उसने एक दफ़ा हुज़ूर अलैहिस्सलाम को बड़ी मस्जिद से आते हुए बड़ी बदतमीज़ी से बुलाया और पैसे माँगे। आपने अपने रूमाल से चार या आठ आने निकाल कर उसे दे दिए, वह ख़ुश होकर चला गया।

मास्टर नज़ीर हुसैन साहब बयान करते हैं कि जब कभी भी मैं अपने वालिद के हमराह क़ादियान हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास आया और हुज़ूर अलैहिस्सलाम को इत्तिला कराई गई कि हकीम मरहम-ए-ईसा साहब आए हैं, तो मैं ने हमेशा यही देखा कि इत्तिला होते ही आप फ़ौरन तशरीफ़ ले आते और ख़ुद कुछ न कुछ खाने के लिए पेश करते। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ऐसी सादगी से मेहमानों को मिला करते थे कि मैंने बाज़ औक़ात हुज़ूर अलैहिस्सलाम को ऐसी हालत में देखा है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हाथ में क़लम होती और बाज़ औक़ात हमसे नंगे पाँव मिलने तशरीफ़ ले आते यानी जिस हालत में अन्दर तशरीफ़ फ़रमा हैं, वैसे ही आ जाते।

हज़रत मुफ़्ती मोहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक दफ़ा मैं लाहौर से क़ादियान आया हुआ था। हज़रत साहब अलै. ने मुझे मस्जिद मुबारक में बिठाया और फ़रमाया बैठो मैं खाना लेकर आता हूँ। फिर चंद मिनट बाद ख़ुद एक बड़ी प्लेट में खाना लेकर तशरीफ़ लाए। फिर फ़रमाया आप खाएँ मैं पानी लाता हूँ। मुफ़्ती साहब कहते हैं, बे-इख़्तियार मेरी आँखों से आँसू निकल आए।

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहब कपूर्थलवी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम कभी खुले किवाड़ (दरवाजे) न बैठते थे। यानी दरवाज़े को बंद कर के बैठते। कहते हैं मैं हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास बैठा था कि थोड़ी-थोड़ी देर बाद हज़रत साहिबज़ादा मियाँ महमूद अहमद साहब कहते "अब्बा कुंडा खोल"। आप अलैहिस्सलाम फ़ौरन उठ कर खोल देते। एक दफ़ा मैं हाज़िर-ए-ख़िदमत हुआ हुज़ूर अलैहिस्सलाम बोरिए (चटाई) पर बैठे थे। मुझे देख कर आपने पलंग उठाया और अन्दर ले गए। मैंने कहा मैं उठा लेता हूँ। आप फ़रमाने लगे भारी ज़्यादा है, आपसे न उठेगा। अन्दर पलंग बिछा कर कहा आप इस पर बैठ जाएँ मुझे नीचे आराम है, मैं नीचे बैठूँगा। मुझे प्यास लगी तो कहा मैं अन्दर से गिलास लाता हूँ। फिर अन्दर से शर्बत की दो बोतलें ले आए जो किसी ने मनीपुर से भेजी थीं। फ़रमाया: इन बोतलों को रखे हुए बहुत दिन हो गए क्योंकि हमने नीयत की थी कि पहले किसी दोस्त को बुला कर पिलाएँगे फिर ख़ुद पीएँगे। मुझे एक गिलास बना कर दिया। मैंने कहा पहले हुज़ूर इसमें से थोड़ा सा पी लें। आपने एक घूँट पीया। मैंने शर्बत की तारीफ़ की। आपने फ़रमाया: एक बोतल आप ले लें और दूसरी बोतल बाहर मेहमानों को पिला दें।

एक दफ़ा लाहौर से मुअज़्ज़ज़ीन (गणमान्य लोग) जिनमें डॉक्टर अल्लामा इक़बाल और सर शहाबुद्दीन वग़ैरह भी शामिल थे, हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात के लिए आए। इस मुलाक़ात के बारे में बाबू ग़ुलाम मोहम्मद साहब बयान करते हैं कि रात को खाना खाने के बाद जब चारपाइयाँ तक़सीम (बांटी) हुईं तो मैंने मज़बूत और बड़ी चारपाई ले ली मगर चौधरी शहाबुद्दीन साहब ने मेरी चारपाई पर क़ब्ज़ा कर लिया। हज़रत साहब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। हर एक से दरयाफ़्त फ़रमाया कि आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं। हर शख़्स ने कहा कि हज़रत मुझे कोई तकलीफ़ नहीं। जब मेरे पास पहुँचे तो मैं परेशान खड़ा था क्योंकि मेरी चारपाई पर शहाबुद्दीन साहब क़ब्ज़ा कर चुके थे। मुझे देख कर फ़रमाया कि ठहरो मैं आपके लिए अन्दर से चारपाई लाता हूँ। काफ़ी देर हो गई, कोई न आया तो मैंने अन्दर झाँका तो देखा कि एक आदमी जल्दी-जल्दी चारपाई बुन रहा है और हज़रत साहब अलैहिस्सलाम उसके सर पर दिया (दीपक) लिए बैठे हैं। हुज़ूर की यह हालत देख कर मुझे बहुत शर्म आई। मैंने अर्ज़ की कि हुज़ूर! दिया मुझे पकड़ा दें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अब तो

एक ही फेरा बाक़ी है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम के यह अख़्लाक़ (नैतिक व्यवहार) देख कर मुझ पर इतना असर हुआ कि मेरे आँसू निकल आए।

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि ग़ालिबन 1896 ईस्वी की बात है। जून का महीना था और अन्दर मकान नया-नया बना था। दोपहर के वक़्त वहाँ चारपाई बिछी थी, मैं लेट गया। हज़रत साहब अलैहिस्सलाम टहल रहे थे। मैं जागा तो देखा हुज़ूर अलैहिस्सलाम चारपाई के नीचे लेटे हैं। मैं अदब से घबरा कर उठ बैठा। आपने फ़रमाया क्यों उठे हैं? अर्ज़ किया कि आप नीचे लेटे हुए हैं, मैं ऊपर कैसे सोए रहूँ? मुस्कुरा कर फ़रमाया: मैं तो आपका पहरा दे रहा हूँ। लड़के शोर करते हैं, उन्हें रोकता था कि आपकी नींद में ख़लल न आए।

हज़रत मुंशी इमाम दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि 1894 ईस्वी में मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दस्त-ए-मुबारक पे बैअत की। शाम की नमाज़ में मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहब मेरे साथ थे। नमाज़ के बाद मुंशी साहब ने मेरी तरफ़ इशारा कर के हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हुज़ूर! इनकी बैअत ले लें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: अन्दर आ जाएँ। मैं अन्दर बैतुल-फ़िक्र में अकेला गया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने चारपाई के सिरहाने की तरफ़ मुझे बिठाया और पांयती (पैताने) की तरफ़ ख़ुद बैठ गए।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: मेरी तो यह हालत है कि अगर किसी को दर्द होता हो और मैं नमाज़ में मश्ग़ूल हूँ, मेरे कान में उसकी आवाज़ पहुँच जावे तो मैं चाहता हूँ कि नमाज़ तोड़ कर भी अगर उसको फ़ायदा पहुँचा सकता हूँ तो पहुँचाऊँ और जहाँ तक मुमकिन है उससे हमदर्दी करूँ। यह अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ है कि किसी भाई की मुसीबत और तकलीफ़ में उसका साथ न दिया जावे। अगर तुम कुछ भी उसके लिए नहीं कर सकते तो कम से कम दुआ ही करो। अपने तो दरकिनार मैं तो कहता हूँ कि ग़ैरों और हिन्दुओं के साथ भी ऐसे अख़्लाक़ का नमूना दिखाओ और उनसे हमदर्दी करो। ला-उबाली (लापरवाह) मिज़ाज हरगिज़ नहीं होना चाहिए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब किसी से मिलते तो मुस्कुराते हुए मिलते कि उसकी सारी कोफ़्त (थकान/परेशानी) दूर हो जाती। आपकी मसर्रत (ख़ुशी) देख कर हर अहमदी महसूस करता था कि आपकी मजलिस में जा कर दिल के सारे ग़म धुल जाते हैं। आपकी आदत थी कि छोटे से छोटे आदमी की बात भी तवज्जो से सुनते थे और बड़ी मोहब्बत से जवाब देते। हर आदमी अपनी जगह समझता था कि हज़रत साहब को उससे ज़्यादा मोहब्बत है। मजलिस में बाज़ औक़ात आदाब-ए-मजलिस से ला-तअल्लुक़ (अनजान) लोग भी देर तक अपनी बातें सुनाते रहते और हज़रत साहब अलैहिस्सलाम ख़ामोशी से सुनते रहते थे। कभी किसी को न कहते कि बस करो। एक शख़्स आपकी ख़िदमत में आया। उसने सर नीचे झुका कर आपके पाँव पर रखना चाहा। हज़रत साहब अलैहिस्सलाम ने हाथ के साथ उसके सर को हटाया और फ़रमाया यह तरीक़ जायज़ नहीं। अस्सलामु अलैकुम कहना और मुसाफ़हा (हाथ मिलाना) करना चाहिए।

एक शख़्स जो फ़क़ीरों और सज्जादा नशीनों का शिफ़्ता (दीवाना) था हमारी मस्जिद में आया। लोगों को आज़ादी से गुफ़्तगू करते देख कर हैरान हो गया। आपसे कहा कि आपकी मस्जिद में अदब नहीं, लोग बे-महाबा (बिना झिझक) बातचीत आपसे करते हैं। आपने फ़रमाया: मेरा मस्लक नहीं कि मैं ऐसा तन्द-ख़ू (ग़ुस्सैल) और भयानक बन कर बैठूँ कि लोग मुझसे ऐसे डरें जैसे दरिन्दे से डरते हैं। और

मैं बुत बनने से सख़्त नफ़रत रखता हूँ। मैं तो बुत-परस्ती के रद्द करने को आया हूँ न यह कि मैं ख़ुद बुत बनूँ और लोग मेरी पूजा करें। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि मैं अपने नफ़्स को दूसरों पर ज़र्रा भी तरजीह (प्रमुखता) नहीं देता। मेरे नज़दीक मुतकब्बिर (घमंडी) से ज़्यादा कोई बुत-परस्त और ख़बीस नहीं। मुतकब्बिर किसी ख़ुदा की परस्तिश नहीं करता बल्कि वह अपनी परस्तिश करता है।

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर साहब रज़ियल्लाहु अन्हु तहरीर करते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहब फ़रमाया करते थे कि वालिद साहब ने अपनी उम्र एक मुग़ल के तौर पर नहीं गुज़ारी बल्कि फ़क़ीर के तौर पर गुज़ारी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अहल-ए-तक़्वा के लिए यह शर्त है कि वह अपनी ज़िन्दगी ग़ुर्बत (गरीबी/सादगी) और मिस्कीनी में बसर करें। यह तक़्वा की एक शाख़ है जिसके ज़रिया से हमें नाजायज़ ग़ज़ब (क्रोध) का मुक़ाबला करना है। बड़े-बड़े आरिफ़ और सिद्दीक़ों के लिए आख़िर कड़ी मंज़िल ग़ज़ब से बचना ही है। उज्ब व पिन्दार (अहंकार और घमंड) ग़ज़ब से पैदा होता है। और ऐसा ही कभी ख़ुद ग़ज़ब, उज्ब व पिन्दार का नतीजा है। क्योंकि ग़ज़ब उस वक़्त होगा जब इंसान अपने नफ़्स को दूसरे पर तरजीह देता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमात वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें, या एक दूसरे पर ग़ुरूर करें या नज़र-ए-इस्तिख़फ़ाफ़ (हिकारत की नज़र) से देखें। ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है। कुछ आदमी बड़ों को मिल कर बड़े अदब से पेश आते हैं। लेकिन बड़ा वो है जो मिस्कीन की बात को मिस्कीनी से सुने। उसकी दिलजोई करे। उसकी बात की इज़्ज़त करे। कोई चिढ़ की बात मुँह पर न लावे कि जिससे दुख पहुँचे। ख़ुदा तआलाफ़रमाताहै:

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ

"वला तनाबज़ू बिल-अल्क़ाब, बिअ-सल्मुल्फ़ुसूक़ु बादल-ईमान, वमन लम् यतुब फ़-उलाइका हुमुज्ज़ालिमून।" (सूरह अल-हुजुरात: 12)

फ़रमाते हैं कि तुम एक दूसरे का चिढ़ के नाम न लो। यह काम फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार (पापियों) का है। जो शख़्स किसी को चिढ़ाता है वह न मरेगा जब तक वह ख़ुद इसी तरह मुब्तला न होगा। अपने भाइयों को हक़ीर न समझो। जब एक ही चश्मे से कुल पानी पीते हो तो कौन जानता है कि किसकी क़िस्मत में ज़्यादा पानी पीना है।

अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी तौर पर आजिज़ी और इन्किसारी पैदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हम हक़ीक़ी इस्लाम की तअलीम पर अमल करने वाले हों और उसका हक़ अदा करने वाले हों। (अमीन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْ كُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131